

## मध्य प्रदेश में मलिा असामान्य टाइटेनोसॉरडि डायनासोर का अंडा

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश के धार ज़िले के बाग इलाके में पहली बार भारतीय शोधकर्त्ताओं की एक टीम ने अंडे के भीतर अंडे (egg-in-egg) या असामान्य टाइटेनोसॉरडि डायनासोर अंडे (abnormal Titanosaurid dinosaur egg) की खोज की है।

### प्रमुख बदि

- इस खोज को नेचर ग्रुप जर्नल-साइंटिफिक रीपोर्ट्स के नवीनतम अंक में प्रकाशित किया गया था। इस अध्ययन का शीर्षक है- 'फर्स्ट ओवम-इन-ओवो पैथोलॉजिकल टाइटेनोसॉरडि एग थ्रोस लाइट ऑन द रपिरोडक्टिवि बायोलॉजी ऑफ सॉरोपॉड डायनासोर' (First ovum-in-ovo pathological titanosaurid egg throws light on the reproductive biology of sauropod dinosaurs)।
- शोधकर्त्ताओं ने हाल ही में बाग शहर के निकट पड़लिया गाँव के पास बड़ी संख्या में टाइटेनोसॉरडि सॉरोपॉड घोंसलों का दस्तावेज़ीकरण किया था। इन घोंसलों का अध्ययन करते हुए शोधकर्त्ताओं ने एक असामान्य डायनासोर के अंडे सहित 10 अंडों से युक्त एक सॉरोपॉड डायनासोर के घोंसले की खोज की है।
- असामान्य अंडे में दो नरितर और गोलाकार अंडे के खोल की परतें हैं, जो एक वसितुत अंतराल से अलग होती हैं, जो ओवम-इन-ओवो (दूसरे अंडे के अंदर एक अंडा) पक्षियों की वकितकी याद दिलाती हैं।
- एक ही घोंसले में पैथोलॉजिकल अंडे और आसन्न अंडे की सूक्ष्म संरचना इसकी पहचान टाइटेनोसॉरडि सॉरोपॉड डायनासोर से करती है।
- यह भारत में पहली अंडे-में-अंडे की असामान्य जीवाश्म अंडे की खोज है। इससे पहले भारत में कभी भी डायनासोर, छपिकली, कछुए और मगरमच्छ सहित अन्य सरीसृपों के अंडे-में-अंडे का असामान्य जीवाश्म अंडा नहीं पाया गया है।
- इस कषेत्र में प्रमुख लेखक डॉ. हर्ष धीमान (भूवज्ज्ञान वभिाग, दलिली वशिवदियालय) द्वारा पीएचडी फीलडवरक के दौरान पैथोलॉजिकल अंडे की खोज की गई थी। धीमान के अलावा, टीम में वशाल वर्मा (हायर सेकेंडरी स्कूल, बकानेर, धार ज़िला) और संबंधित लेखक प्रो. गुंटुपल्ली वी.आर. प्रसाद (भूवज्ज्ञान वभिाग, दलिली वशिवदियालय) शामिल थे।
- डॉ. हर्ष धीमान ने कहा कि टाइटेनोसॉरडि घोंसले से ओवम-इन-ओवो अंडे की खोज इस संभावना को खोलती है कि सॉरोपॉड डायनासोर में मगरमच्छ या पक्षियों के समान एक डबिवाहनी आकारकी थी और वे पक्षियों की अंडे देने वाली वशिषता के एक तरीके के लिये अनुकूलति हो सकते थे।
- प्रो. गुंटुपल्ली वी.आर. प्रसाद ने कहा कि यह खोज इस बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी सामने लाती है कि क्या डायनासोर के पास कछुओं और छपिकलियों या उनके निकटतम मगरमच्छों और पक्षियों के समान प्रजनन जीव वज्ज्ञान था।
- पहले यह सुझाव दिया गया था कि मगरमच्छों और पक्षियों के खंडति प्रजननपथ के वपिरीत डायनासोर का प्रजनन कार्य कछुओं और अन्य सरीसृपों (अखंडति डबिवाहनी-unsegmented oviduct) के समान होता है।
- मगरमच्छ हालाँकि कछुओं और अन्य सरीसृपों की तरह सभी अंडों को एक साथ ओव्यूलेट करते और छोड़ते हैं, पक्षियों के अनुक्रमिक ओव्यूलेशन के वपिरीत, जो एक बार में एक अंडा देते हैं।
- नई खोज से पता चलता है कि मध्य और पश्चिमी भारत में डायनासोर के जीवाश्मों के लिये काफी संभावनाएँ हैं, जो डायनासोर प्रजातियों की वविधिता और उनके घोंसले के व्यवहार एवं प्रजनन जीव वज्ज्ञान पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं।